मैथिलीशरण गुप्त जयंती पर हिन्दी विभाग के छात्रों का व्याख्यान

दबंग रिपोर्ट » खरसिया

03 अग 202

महात्मा गांधी स्नातकोर महाविद्यालय खरसिया के हिन्दी विभाग में मैथिलीशरण गुप्त जयंती 3 अगस्त को मनाई गई। विभागाध्यक्ष डॉ आर के टप्डन की अध्यक्षता में ऑनलाईन आयोजित इस जयंती में मुख्य अतिथि की आसंदी से चरणदास बर्मन सहायक प्राध्यापक हिन्दी शासकीय महाविद्यालय चन्द्रपुर ने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कला पर विशेष रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि गुप्त जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से उर्मिला, यशोधरा, शकुंतला, विष्णुप्रिया, रत्नावली जैसे पौराणिक महिला पात्रों को प्रतिष्ठित किया। नर की तुलना में नारी को दोगुनी मात्रा का बताते हुए नारियों की महिमा भी प्रतिपादित किए। विभागीय सहायक प्राध्यापक दिनेश संजय के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में खास बात यह थी कि एम ए द्वितीय सेमेस्टर के तीन छात्रों हेमलता टप्डन, वैज्ञानिक कुमार टाप्डे, संदीपा साहू और चतुर्थ सेमेस्टर के तीन छात्रों मनीषा डनसेना, माया साहू, कुमेश्वरी पटैल ने छात्र वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। विभागाध्यक्ष ने हमारे संवाददाता को बताया कि ऐसे ही आगामी कार्यक्रमों में क्रम से अन्य छात्रों को व्याख्यान देने का अवसर प्रदान किया जाएगा, जिससे छात्रों में सम्भाषण कला विकसीत होगी और लेखक, कवियों को बारिकी से अध्ययन करने में उनकी रूचि जागृत होंगी।

विभागीय सहायक प्राध्यापक जयराम कुर्रे ने भी छात्रों को सम्बोधित किया और अतिथि का आभार व्यक्त किया। वक्ताओं ने 1886 में झांसी में जन्म लिए नाटककार, अनुवादक और राष्ट्रकवि के रूप में ख्याति प्राप्त गुप्त की खास रचनाओं जैसे पंचवटी, साकेत, यशोधरा, भारत भारती आदि की विशेषताओं को उल्लेखित करते हुए उनकी कविताओं की विशेषताएँ जैसे राष्ट्रीयता, गांधीवाद की प्रधानता, गौरवमय अतीत की स्थापना, भारतीय संस्कृति, नारी की महिमा को भी उदाहरण सहित रेखांकित किया। गुप्त 12 वर्ष की उम्र से ही ब्रजभाषा में कविता करने लगे थे। 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका का संपादन किया, जिसमें खड़ी बोली हिन्दी को गद्य व पद्य दोनों प्रकार के साहित्य की भाषा के रूप में स्वीकृति मिली। द्विवेदी जी ने ही गुप्तजी को खड़ी बोली हिन्दी में कविता रचने के लिए प्रेरित किए। इन्हें 1953 में पद्म विभूषण एवं 1954 में शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में पद्म भूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया। गांधी जी ने गुप्त जी को राष्ट्रकवि की संज्ञा दी थी।

कार्यक्रम में 43 विभागीय छात्रों की आनलाईन उपस्थिति रही। संयोजक प्रो. दिनेश संजय थे।